

Sanskritasahitya Ki Eka Jhanki

——
संस्कृतसाहित्य की ओक अँकी

——
Document Information



Text title : Sanskritasahitya Ki Eka Jha.nki

File name : sanskRRitasAhityakIekajhAnkI.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om


This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org



संस्कृतसाहित्य की એક ઝાંકી



આઓ ભાઈ સંસ્કૃત કા કુછ પરિચય તુમ્હે કરાવે,
ઇસકે સાહિત્યિક વૈભવ કી ઝાંકી એક દિખાવે ।
ઇસકે પાવન પદ-પદ્મો પર, આઓ શીશ ઝુકાઓ,
આજ પ્રતિજ્ઞા લેકર ઇસકી રક્ષા કા, ઘર જાઓ । ૧
યહ દુનિયા કી ભાષાઓ મેં સબસે પહલી ભાષા,
સબસે શિષ્ટ પરિષ્કૃત કોમલ યહ ઇસકી પરિભાષા ।
ભારત કે સબ જ્ઞાન-કલા કા અક્ષય યહી ખજાના,
ઇસકા કામ સભી લોગોં કો સુન્દર સુખી બનાના । ૨
યે હૈં ચારો વેદ જગત કે આદિમ ગ્રન્થ મહાન,
જિનસે મિલા વિશ્વ કો પહલે જ્ઞાન જ્યોતિ કા દાન ।
બ્રાહ્મણ ગ્રન્થ તથા આરણ્યક વેદોં કે પરિશિષ્ટ,
ઔર ચાર ઉપવેદ અડ્ગ છ વૈદિક અડ્ગ વિશિષ્ટ । ૩
ઇધર વેદ-સાહિત્ય શિરોમણિ યે ઉપનિષદ મહાન,
સત્ય-જ્ઞાન-આનન્દ-શાન્તિમય જીવન કે સોપાન ।
ગૌતમ-કપિલ-કણ્ણ-પત્તજલિ-જૈમિનિ વ્યાસ-વિનિર્મિત,
યે છ દર્શન-શાસ્ત્ર હમારે જ્ઞાનસમુદ્ર અસીમિત । ૪
યહાં આદિ કવિ વાલ્મીકિ કી અમર કાવ્યમય ધારા,
જિસકા દિવ્ય સુધા રસ પીકર જીવિત દેશ હમારા ।
વ્યાસ-મહામુનિ કી પ્રતિભા કા ઇધર દિવ્ય વરદાન,
પગ્થમ વેદ મહાભારત હૈં ભારત કા અભિમાન । ૫
યે હૈં પૂજ્ય પુરાણ અઠારહ ઉપપુરાણ સમવેત,
ધર્મ-નીતિ-ઇતિહાસ-સુભાષિત-નાનાવિષય-સમેત ।
યાજ્ઞવલ્ક્ય-મનુ-આદિ રચિત યે ધર્મગ્રન્થ અનેક,
સદાચાર-વર્ણશ્રમ-વિધિ કા જિનમેં વિશદ વિવેક । ૬
ગણિત-કૃતિ-સિદ્ધાન્ત-સહિત યહ જ્યોતિષ શાસ્ત્ર અપાર,

यल अष्टाङ्ग चिकित्सा-तरु का शाभा-शत-विस्तार ।
 शिल्प-कला-सङ्गीत-नाट्य के यहाँ ग्रन्थ ये आकर,
 कामशास्त्र के ग्रन्थ धर ये स्नेह-सौम्य-रत्नाकर । ७
 यहाँ काव्य-नाटक यम्भू का लव्य विपुल विस्तार,
 विविध छन्द सज्जा शैली का यल अनुपम सम्भार ।
 सरस मधुर कोमल कविता का यल सुन्दर उद्यान,
 जहाँ दूर से मुग्ध मधुप आ करते हैं मधुपान । ८
 धर चित्र-काव्यों की देभें थारु यमदृति-शाली-
 अभिल विश्व में अपनी जैसी रचना ऐक निराली ।
 ऐकाक्षर द्वयक्षर बह्वर्धक विपर्यस्त कवितार्थे,
 ँस उपवन की रंग-भिरंगी सली कुसुम-कलिकार्थे । ९
 नीति-सुभाषित ग्रन्थों की यल अनुपम मणिमय माला,
 ऐक-ऐक दाने से ढोता जिनके परम उजाला ।
 यहाँ देभिये लोक कथाओं का साहित्य अपार,
 गद्य-पद्यमय परम मनोहर सत्-शिक्षा आगार । १०
 यहाँ देभिये स्तुतिग्रन्थों का ऐक अलग संसार,
 जहाँ भक्ति-करुणा-वत्सलता की बलती रसधार ।
 यहाँ ललित-गीतों का, देभें, मोलक स्वर-सञ्चार,
 ऐक ऐक पद में वाणी का नव नूपुर-जङ्कार । ११
 वैदिक गृह्य कर्मकाण्डों का यल संघात मडान,
 पूजा यज्ञ तीर्थ व्रत संस्कारों का विविध विधान ।
 यल काश्मीरिक शैव तन्त्र-ग्रन्थों का ऐक निकाय,
 मन्त्र-साधना के ग्रन्थों का यल अद्भुत समुदाय । १२
 यल, देभो, हैं कालिदास की अद्भुत कृतियाँ सारी,
 ऐक ऐक कविता है ँनकी निधि अनमोल डमारी ।
 यहाँ देभिये पाणिनि मुनि की अद्भुत अष्टाध्यायी,
 जिसने जग में भारत-भू की अमर कीर्ति फैलायी । १३
 गुरु वशिष्ठ का विस्मयकारी यल कर्तृत्व मडान,
 ग्रन्थ योगवाशिष्ठ देभिये ज्ञान-समुद्र-समान ।
 यहाँ आर्य याज्ञिक्य मडामति की प्रतिभा का वैभव,
 ग्रन्थ देभिये अर्थशास्त्र यल भारत-भू का गौरव । १४
 यल वाराड मिडिर की देभें, बृहत्संहिता कैसी,

रचना नाना-विषय-समन्वित अद्भुत सागर जैसी ।
व्यासदास क्षेमेन्द्र मंडाकवि का यल ग्रन्थ-वितान,
सकल लोक-यातुर्य-कला का अनुपम अेक निधान । १५
बौद्ध-जैन-संस्कृत-ग्रन्थों का यल अद्भुत भाण्डार,
धर ट्रेभिये, शत-शत अनुपम रत्नों का आगार ।
वैदिक-बौद्ध-जैन-कृतियों का संस्कृत पावन सङ्गम,
जिसकी धारा से भारत का प्वावित स्थावर-जङ्गम । १६
भाषा या साहित्य नहीं यल वाणी का शृङ्गार,
यल स्वर्गीय सुधा का शीतल सुरभित रसमय धार ।
भारत की साहित्य-साधना-संस्कृति का यल प्राण,
इसकी रक्षा में डी निश्चित भारत का कल्याण ।
इसका शुभ दर्शन कर अपना जुवन धन्य बनाओ,
आज प्रतिज्ञा लेकर इसकी रक्षा का, धर जाओ । १७

– रचयिता - श्री. वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

Sanskritasahitya Ki Eka Jhanki
pdf was typeset on May 19, 2024

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

